ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

देवो देवानमसि। ऋग्वेद 1/94/13

हे परमात्मन् ! तू देवों का देव है तू महादेव है।

O God ! you are the Lord of lords.

वर्ष 39, अंक 19 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 14 मार्च, 2016 से रविवार 20 मार्च, 2016
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्द: 192 वार्षिक शुल्क: 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

केन्द्रीय आर्यसमाज नेपाल एवं सार्वदेशिक सभा की बैठक काठमांडू में सम्पन्न

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नेपाल – 20–21–22 अक्टूबर, 2016 काठमाण्डू में करने का निर्णय

नेपाल में आर्य समाज के विस्तार की अनन्त संभावनाएं – प्रकाश आर्य

मैं स्वयं उपस्थित होकर करुंगा सब देशों के आर्य प्रतिनिधियों का स्वागत – पर्यटन मंत्री नेपाल

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नेपाल की रूप रेखा तय करने के लिए नेपाल पहुंचे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री प्रकाश आर्य, उप मंत्री श्री विनय आर्य एवं स्वामी सम्पूर्णानन्द सरस्वती बैठक में भाग लेते हुए साथ में हैं केन्द्रीय आर्य समाज नेपाल के प्रधान कमलाकांत आत्रेय, मंत्री माधव प्रसाद उपाध्याय एवं बागमती स्कूल के चेयरमैन प्रो. सुरेन्द्र कुमार एवं अन्य आर्य महानुभाव।

- **श्री प्रकाश आर्य के नेतृत्व में श्री कमलाकान्त आत्रेय, श्री माधव प्रसाद उपाध्याय एवं श्री विनय आर्य ने लिया बैठक में भाग**
- **शीघ्र होगी नेपाल यात्रा के विस्तृत कार्यक्रम की घोषणा**

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2012 के अवसर पर घोषित आगामी सम्मेलनों की श्रृंखला में इस वर्ष 2016 का अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नेपाल में किया जाएगा। इस सम्मेलन के लिए 20-21-22 अक्तूबर, 2016 की तिथियों का निर्धारण किया गया है। गत दिनों काठमांडू में इस महासम्मेलन की तैयारियों के लिए केन्द्रीय आर्यसमाज नेपाल एवं सार्वदेशिक सभा के पदाधिकारियों की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में नेपाल आर्यसमाज की ओर से प्रधान श्री कमला कान्त आत्रेय, मन्त्री श्री माधव प्रसाद उपाध्याय, सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य, उपमन्त्री श्री विनय आर्य एवं आर्य संन्यासी स्वामी सम्पूर्णानन्द जी सम्मिलित हुए।

इससे पूर्व नेपाल में गत एक मास से चल रहे यज्ञोत्सव के समापन समारोह में भी सभा अधिकारियों ने भाग लिया। इस समारोह में भी नेपाल आर्य महासम्मेलन की तिथियों की घोषणा की गई। नेपाल के पर्यटन मन्त्री श्री आनन्द प्रसाद पोखरेल ने कहा कि मैं व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर देश-विदेश से पधारने वाले समस्त आर्य प्रतिनिधियों का स्वागत करुंगा।

मनुस्मृति उस काल की है जब जन्मना जाति व्यवस्था के विचार का भी कोई अस्तित्व नहीं था। अतः मनुस्मृति जन्मना समाज व्यवस्था का कहीं पर भी समर्थन नहीं करती। महर्षि मनु ने मनुष्य के गुण-कर्म स्वभाव पर आधारित समाज व्यवस्था की रचना करके वेदों में परमात्मा द्वारा दिए गए आदेश का ही पालन किया है (देखें -ऋग्वेद-10.10.11-12, यजुर्वेद-31.10-11, अथर्ववेद-19.6.5-6)।

एबीवीपी के जेएनयू से सम्बंधित कुछ कार्यकर्त्ता महिला दिवस पर मनुस्मृति दहन दिवस का आयोजन करने जा रहे हैं। मनुस्मृति के विषय में यह प्रचलित किया गया है कि मनुस्मृति जातिवाद की पोषक है, उसमें नारी जाति को तुच्छ माना गया है। सत्य यह है कि मनुस्मृति में मध्य काल में कुछ मूर्ख लोगों ने मिलावट कर मनु महर्षि को जातिवादी और नारी जाति के साथ भेदभाव करने का प्रयास किया था। जब दोष किसी अन्य का है तो उसके लिए दोषी मनु महर्षि को क्यों माने? कालांतर में कुछ लोग सत्य को जानते हुए भी स्वीकार नहीं करते और मनुस्मृति दहन दिवस जैसे कृत्यों को कर सस्ती लोकप्रियता बटोरने का प्रयास करते हैं। इस लेख के माध्यम इस शंका का समाधान किया गया है कि 'क्या महर्षि मनु जातिवाद के पोषक थे?'

क्या महर्षि मनु जातिवाद के पोषक थे?

-विवेक आर्य

मनुस्मृति जो सृष्टि में नीति और धर्म (कानून) का निर्धारण करने वाला सबसे पहला ग्रंथ माना गया है उसको घोर जाति प्रथा को बढ़ावा देने वाला भी बताया जा रहा है। आज स्थिति यह है कि मनुस्मृति वैदिक संस्कृति की सबसे अधिक विवादित पुस्तक बना दी गई है। पूरा का पूरा दलित आन्दोलन मनुवाद के विरोध पर ही खड़ा हुआ है। ध्यान देने वाली बात यह है कि मनु की निंदा करने वाले इन लोगों ने मनुस्मृति को कभी गंभीरता से पढ़ा भी नहीं है। स्वामी दयानंद द्वारा आज से 140 वर्ष पूर्व यह सिद्ध कर दिया था कि मनुस्मृति में मिलावट की गई है। इस कारण से ऐसा प्रतीत होता है कि मनुस्मृति वर्ण व्यवस्था की नहीं अपितु जातिवाद का समर्थन करती है। महर्षि मनु ने सृष्टि का प्रथम संविधान मनुस्मृति के रूप में बनाया था। कालांतर में इसमें जो मिलावट हुई, उसी के कारण इसका मूल सन्देश जो वर्णव्यवस्था का समर्थन करना था, के स्थान पर जातिवाद प्रचारित हो गया।

मनुस्मृति पर दलित समाज यह आक्षेप लगाता है कि मनु ने जन्म के आधार पर जातिप्रथा का निर्माण किया और शूद्रों के लिए कठोर दंड का विधान किया और ऊँची जाति विशेष रूप से ब्राह्मणों के लिए विशेष प्रावधान का विधान किया।

मनुस्मृति उस काल की है जब जन्मना जाति व्यवस्था के विचार का भी कोई अस्तित्व नहीं था। अत: मनुस्मृति जन्मना समाज व्यवस्था का कहीं पर भी समर्थन नहीं करती। महर्षि मनु ने मनुष्य के गुण-कर्म स्वभाव पर आधारित समाज व्यवस्था की रचना करके वेदों में परमात्मा द्वारा दिए गए आदेश का ही पालन किया है (देखें -ऋग्वेद-10.10.11-12, यजुर्वेद-31.10-11, अथर्ववेद-19.6.5-6)।

यह वर्ण व्यवस्था है। वर्ण शब्द "वृञ" धातु से बनता है जिसका मतलब है चयन या चुनना और सामान्यत: प्रयुक्त शब्द वरण भी यही अर्थ रखता है।

मनुस्मृति में वर्ण व्यवस्था को ही बताया गया है और जाति व्यवस्था को नहीं इसका सबसे व्यवस्था को ही बताया गया है और जाति व्यवस्था को नहीं इसका

...शेष पेज 3 पर

सम्पादकीय मुसलमानों से नहीं, ब्राह्मणों से है खतरा -हंसानन्द

हो सकता है, ब्राह्मण नाम के साथ खतरा शब्द चिह्नित देख कुछ लोग लेख को किसी पूर्वाग्रह से ग्रसित समझें किन्तु कहने का तात्पर्य सिर्फ इतना है कि ब्राह्मण नहीं ब्राह्मण-वाद के खिलाफ समाज खड़ा हो।

भारत को आजाद हुए भले ही 68 साल बीत चुके हैं लेकिन अभी भी यह देश जातिवाद जैसी सामाजिक बुराइयों से जूझ रहा है। पंजाब के फगवाड़ा शहर में तो इस जातिवाद का जहर मरने के बाद भी लोगों का पीछा नहीं छोड़ता। फगवाड़ा के क्षेत्र हदिआबाद में अलग-अलग जातियों के लिए अलग-अलग शमशान घाट बनाये गए हैं। इस शमशान घाटों के सेवादारों का कहना है कि बरसों से इस इलाके में यही प्रथा चली आ रही है। एक साल पहले हरियाणा के हिसार जनपद के भगाना गाँव में जिस तरह से वहाँ दलित समाज को किसी भी स्तर पर आशानुरूप सामाजिक न्याय नहीं मिल पा रहा था जिस कारण पहले उन्होंने घर छोड़ने के बाद अब अपना धर्म छोड़ने तक का सफर भी तय करना पड़ा। दिल्ली में जंतर-मंतर पर धरने में ही लगभग सौ दलित परिवारों ने हिन्दू धर्म छोड़ते हुए पूरे रीति रिवाज से इस्लाम धर्म को अपना लिया है जिसके बाद समाज की उस क्रूर मानसिकता और हजारों वर्षों से भारतीय समाज में व्याप्त जाति व्यवस्था का यह विद्रूप चेहरा भी सामने आया है इस सबके बीच सबसे चिंता की बात यह है कि देश के किसी भी राजनैतिक दल की ओर से इन दलितों और प्रताड़ित किये गए वंचितों के प्रति कोई चिन्ता या संवेदनशीलता दिखाई नहीं दी! यह कोई अकेली घटना नहीं है बल्कि सामाजिक स्तर पर रोजाना ऐसी घटनाएं हो रही हैं जिसमें ब्राह्मण वाद कहीं सीधे तौर पर तो कहीं उसके द्वारा खड़ी की गयी सामाजिक जाति व्यवस्था पर प्रश्नचिह्न लगता दिखाई देता है।

यही नहीं यदि हम सरहद पार चलें तो वहाँ का हाल भी यही है। जगजीत सिंह पाकिस्तान के उन दलित हिंदुओं में से हैं जो भेदभाव से तंग आकर अपना धर्म बदलने पर मजबूर हुए हैं। जगजीत अपने परिवार के साथ सिंध प्रांत के रेगिस्तानी जिले थरपारकर के मुख्यालय मट्ठी में रहते हैं। 2005 तक जगजीत का नाम हंसानन्द था, लेकिन फिर उन्होंने अपनी पत्नी और बच्चों के साथ अपना धर्म छोड़ कर सिख धर्म अपना लिया। वे कहते हैं, 'मैं इस इलाके को छोड़कर नहीं जाना चाहता हूं और यहां बगावत की एक मिसाल के तौर पर रहना चाहता हूं।' जगजीत यहां तक दावा करते हैं कि पांच साल पहले ब्राह्मण हिंदुओं ने उन पर कातिलाना हमला भी किया था। वे कहते हैं कि धर्म परिवर्तन करने से उन्हें मन की शांति मिली है। अब उनका बेटा दलित नहीं सरदार का बेटा कहलायेगा। 'पाकिस्तान हिंदू पंचायत' संगठन के महासचिव रवि दावानी कहते हैं, दलित समुदाय को हिंदुओं में गिना जाए तो समस्या नहीं होनी चाहिए। पाकिस्तान में हिन्दू अल्पसंख्यक अधिकारों की बात करना ऐसे ही लोगों की बात करने के बराबर है। लेकिन पाकिस्तान में दलित समुदाय के अधिकारियों के लिए काम करने वाले और राष्ट्रपति पुरस्कार विजेता डॉक्टर सोनू खनगरियानी तस्वीर का दूसरा रुख दिखाते हुए कहते हैं कि हिंदू अल्पसंख्यकों को मिलने वाले अधिकार तो ब्राह्मण ले जाते हैं। वे कहते हैं, 'इसमें कोई दो राय नहीं कि हमें इस देश में मुसलमानों से कोई खतरा नहीं, बल्कि खतरा ब्राह्मणों से है। यह छुआछूत अकेले पाकिस्तान की बीमारी नहीं है बल्कि इससे भी बुरा हाल हिंदुस्तान का है। वीर सावरकर की प्रसिद्ध पुस्तक "मोपला" में मालाबार में हुए दंगों का सच दिखता है कि किस तरह केरल के अन्दर ब्राह्मणवाद के कारण ही इतना बड़ा अत्याचार हुआ ब्राह्मण-वाद की बदौलत हमेशा से ही मूलवासी दलितों का शोषण होते आया है और जब मूलवासी आदिवासी इससे बचे रहे तब ब्राह्मण-वाद ने अपने हित के लिए आदिवासियों को भी अपने जाल में फँसाया और प्रकृति-पूजकों को जाति व्यवस्था में शूद्र का दर्जा देने की कोशिश की। जिस कारण आज पूर्वी भारत में ईसाइयत और इस्लाम का प्रभाव बढ़ा। 11वीं सदी में भारत पर पहला मुस्लिम आक्रमण हुआ और यूरोपीय देशों ने तो भारत पर 17वीं-18वीं शताब्दियों में कब्जा करना शुरू किया किन्तु उससे पहले तो यहाँ जातिवाद और पाखंड के कारण लाखों लोग बौद्ध और जैन मत स्वीकार कर चुके थे। इससे यह स्पष्ट है कि जाति प्रथा और धर्मपरिवर्तन के लिए विदेशी हमलावरों को दोषी ठहराने से पहले हमें खुद के सामाजिक भेदभाव का अवलोकन भी कर लेना चाहिए! मतलब अपने धर्म में अपमान करो जब वे दूसरे में जाते है तो उन्हें दोषी ठहराओ।

आज सवाल यह नहीं है कि समाज जीवित है या मर गया? सवाल यह है किस स्तर पर जीवित है। हम अक्सर कहीं भी होते हैं, धर्म परिवर्तन पर सीधे तौर पर दूसरे सम्प्रदायों, मतों पर आरोप लगाते हैं किन्तु उस व्यवस्था पर कभी प्रश्नचिह्न खड़ा नहीं करते जिसके कारण यह सब होता है, हमारे देश के नेता हमेशा जाति सुधार की बात करते हैं किन्तु उस नजरिये के सुधार की बात नहीं करते जिसके कारण यह सब समस्याएं खड़ी होती हैं जिसके कारण मनुष्य जातिगत शब्दों से हीन समझा जाता है। बहुत सी जगह आज भी दलितों को मन्दिर में प्रवेश की अनुमति नहीं है आस्था प्रार्थना तक में जातिगत शब्दों से तिरस्कार होता है किन्तु जब वे बहिष्कृत लोग धर्मपरिवर्तन कर लेते हैं तब धर्म के लोप का रोना रोया जाता है। सोचो आखिर जातिवाद क्या है इससे हमने अभी तक क्या पाया? **-सम्पादक**

स्वाध्याय हे समर्थ परमेश्वर!

दृते दृंह मा। ज्योक्ते संदृशि जीव्यासं ज्योक्ते संदृशि जीव्यासम्।।
-यजु:0 36/19
ऋषि:-दध्यङ्.ङ.ाथर्वण:।। देवता-ईश्वर:।।
छन्द:-पादनिचृद्गायत्री।।

विनय - हे जगदीश्वर! मैं चाहता हूं कि अब मैं तुम्हारी अध्यक्षता में ही जीऊं-तुम्हारी देख-रेख में-तुम्हारी आंखों के नीचे ही अपना जीवन व्यतीत करूं। मुझे यह सदा स्मरण बना रहे कि तुम मुझे देख रहे हो। मेरा एक-एक कार्य, मेरी एक-एक चेष्टा, एक-एक गति तुम्हें साक्षी रखकर की गई हो। इस प्रकार तुम्हारे सम्यक् दर्शन में तुम्हें देखता हुआ मैं चिरकाल तक जीऊं। सच तो यह है कि जब मैं तुम्हारी ठीक-ठीक अध्यक्षता में अपना जीवन व्यतीत करूंगा तो मेरा जीवन स्वाभाविकरूप से ऐसा चलेगा कि यह स्वयंमेव दीर्घजीवी हो जाएगा, अत: मैं तो इतना ही चाहता हूं कि मैं कभी तुम्हारे सन्दर्शन से पृथक् न हो जाऊं, परन्तु तुम्हारे सन्दर्शन में जीना आसान काम नहीं है। मैं यह जानता हूं कि तुम ही मेरे जीवन हो, मेरी शक्ति हो, मेरी आत्मा हो, तो भी मैं निर्बलतावश तुम्हें सदा भूला रहता हूं। सांसारिक वायु के झोंकों के थपेड़ों से मेरी सुध-बुध ऐसी भूली रहती है कि मुझमें तुम्हारी स्मृति जागृत् नहीं रह सकती। इसलिए हे जगदीश्वर! मेरी तो तुमसे यह प्रार्थना है कि तुम मुझे पहले दृढ़ बना दो, मजबूत बना दो, चट्टान बना दो। हे दृते! हे सर्वशक्तिस्वरूप! तुम मुझे ऐसा दृढ़ बना दो कि संसार की घटनाएं मुझे चलायमान न कर सकें। मैं सदा तुम्हें देखते रहने का यत्न करता हूं-तुम्हें देखते रहते हुए ही अपने सब कर्म करने का यत्न करता हूं, परन्तु यह बहुत थोड़ी देर चलता है। कोई भी सांसारिक खुशी या कोई दु:ख, कोई चिन्ता आने पर मेरा वह सात्विक ध्यान जाता रहता है। कोई भी नई-सी बात होने पर मेरा ध्यान उधर खिंच जाता है और मैं उस तेरे सन्दर्शन की सुखमय अवस्था से गिर जाता हूं। इसलिए, हे दृते! मैं दृढ़ता का भिखारी हुआ हूं। मैं जानता हूं कि जब मैं दृढ़ हो जाऊंगा तथा उस दृढ़ता द्वारा सुख में, दु:ख में, सम्पत् में, विपत् में सदा तुम्हारा यह सन्दर्शन करते रहने का अभ्यासी हो जाऊंगा तो धीरे-धीरे तुम्हारा सम्यक् दर्शन मुझमें ऐसा समा जाएगा कि यह फिर मुझसे जुदा न हो सकेगा और तब मुझे तुम्हारा ध्यान करने की भी आवश्यकता न रहेगी। जैसे हम दिनभर सूर्य-प्रकाश द्वारा ही सब काम करते हैं, परन्तु हमें यह याद रखने की आवश्यकता नहीं होती कि हम सूर्य प्रकाश में हैं। जैसे हम दिनभर सूर्य-प्रकाश द्वारा ही सब काम करते हैं, वैसे ही तब मैं बिना यत्न किये तुम्हारे सन्दर्शन के प्रकाश में चौबीसों घण्टे रहने-सहने और जीवन व्यतीत करने वाला हो जाऊंगा, अत: हे दृते! मुझे ऐसा दृढ़ बना दो कि मैं कभी तुम्हारे सन्दर्शन से न हट सकूं।

शब्दार्थ:- दृते-हे सर्वसमर्थ परमदृढ़ परमेश्वर! मा-मुझे दृंह-दृढ़ बना दे, जिससे कि मैं ते संदृशि-तेरे सन्दर्शन में, तेरी ठीक दृष्टि में ज्योक्-चिरकाल तक जीव्यासम्-जीता रहूं ते संदृशि ज्योक् जीव्यासम्-तेरे सम्यक् दर्शन में दीर्घ आयु तक जीवित रहूं।

साभार : वैदिक विनय

पुस्तक प्राप्ति के लिए वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

21वां रोग निदान शिविर अलवर में सम्पन्न

आर्य कन्या विद्यालय समिति एवं श्री रामजीलाल आर्य कन्या छात्रावास समिति, अलवर के तत्त्वावधान में हरीश अस्पताल के सौजन्य से नि:शुल्क 21वां रोग निदान शिविर दिनांक 28 फरवरी 2016 को वैदिक विद्या मंदिर अलवर में प्रधान श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता के नेतृत्व में आयोजित किया गया, जिसमें लगभग 300 रोगियों को नि:शुल्क परामर्श दिया गया व उनका चेकअप किया गया। **-कमला शर्मा, निदेशक**

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36-16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36-16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30-8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

पृष्ठ 1 का शेष

क्या महर्षि मनु ...

बड़ा प्रमाण यह है कि मनुस्मृति के प्रथम अध्याय में कहीं भी जाति शब्द ही नहीं है बल्कि वहां चार वर्णों की उत्पत्ति का वर्णन है। यदि जाति का इतना ही महत्त्व होता तो मनु इसका उल्लेख अवश्य करते कि कौन सी जाति ब्राह्मणों से संबंधित है, कौनसी क्षत्रियों से, कौनसी वैश्यों और शूद्रों से सम्बंधित हैं।

इसका मतलब हुआ कि स्वयं को जन्म से ब्राह्मण या उच्च जाति का मानने वालों के पास इसका कोई प्रमाण नहीं है। ज्यादा से ज्यादा वे इतना बता सकते हैं कि कुछ पीढ़ियों पहले से उनके पूर्वज स्वयं को ऊँची जाति का कहलाते आए हैं। ऐसा कोई प्रमाण नहीं है कि सभ्यता के आरंभ से ही यह लोग ऊँची जाति के थे। जब वह यह साबित नहीं कर सकते तो उनको यह कहने का क्या अधिकार है कि आज जिन्हें जन्मना शूद्र माना जाता है, वह कुछ पीढ़ियों पहले ब्राह्मण नहीं थे? और स्वयं जो अपने को ऊँची जाति का कहते हैं वे कुछ पीढ़ियों पहले शूद्र नहीं थे?

मनुस्मृति 3.109 में साफ कहा है कि अपने गोत्र या कुल की दुहाई देकर भोजन करने वाले को स्वयं का उगलकर खाने वाला माना जाए। अत: मनुस्मृति के अनुसार जो जन्मना ब्राह्मण या ऊँची जाति वाले अपने गोत्र या वंश का हवाला देकर स्वयं को बड़ा कहते हैं और मान-सम्मान की अपेक्षा रखते हैं उन्हें तिरस्कृत किया जाना चाहिए।

मनुस्मृति 2.136: धनी होना, बांधव होना, आयु में बड़ा होना, श्रेष्ठ कर्म का होना और विद्वत्ता यह पाँच सम्मान के उत्तरोत्तर मानदंड हैं। इन में कहीं भी कुल, जाति, गोत्र या वंश को सम्मान का मानदंड नहीं माना गया है।

वर्णों में परिवर्तन- मनुस्मृति 10.65 : ब्राह्मण शूद्र बन सकता है और शूद्र ब्राह्मण हो सकता है। इसी प्रकार क्षत्रिय और वैश्य भी अपने वर्ण बदल सकते हैं।

मनुस्मृति 9.335: शरीर और मन से शुद्ध-पवित्र रहने वाला, उत्कृष्ट लोगों के सानिंध्य में रहने वाला, मधुरभाषी, अहंकार से रहित, अपने से उत्कृष्ट वर्ण वालों की सेवा करने वाला शूद्र भी उत्तम ब्रह्म जन्म और द्विज वर्ण को प्राप्त कर लेता है।

मनुस्मृति के अनेक श्लोक कहते हैं कि उच्च वर्ण का व्यक्ति भी यदि श्रेष्ट कर्म नहीं करता, तो शूद्र (अशिक्षित) बन जाता है।

उदाहरण- 2.103: जो मनुष्य नित्य प्रात: और सांय ईश्वर आराधना नहीं करता उसको शूद्र समझना चाहिए।

2.172: जब तक व्यक्ति वेदों की शिक्षाओं में दीक्षित नहीं होता वह शूद्र के ही समान है।

4.245: ब्राह्मण-वर्णस्थ व्यक्ति श्रेष्ठ अति श्रेष्ठ व्यक्तियों का संग करते हुए और नीच- नीचतर व्यक्तियों का संग छोड़कर अधिक श्रेष्ट बनता जाता है। इसके विपरीत आचरण से पतित होकर वह शूद्र बन जाता है। अत: स्पष्ट है कि ब्राह्मण उत्तम कर्म करने वाले विद्वान व्यक्ति को कहते हैं और शूद्र का अर्थ अशिक्षित व्यक्ति है। इसका किसी भी तरह जन्म से कोई सम्बन्ध नहीं है।

2.168: जो ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य वेदों का अध्ययन और पालन छोड़कर अन्य विषयों में ही परिश्रम करता है, वह शूद्र बन जाता है और उसकी आने वाली पीढ़ियों को भी वेदों के ज्ञान से वंचित होना पड़ता है। अत: मनुस्मृति के अनुसार तो आज भारत में कुछ अपवादों को छोड़कर बाकी सारे लोग जो भ्रष्टाचार, जातिवाद, स्वार्थ साधना, अन्धविश्वास, विवेकहीनता, लिंग-भेद, चापलूसी, अनैतिकता इत्यादि में लिप्त हैं वे सभी शूद्र हैं।

2.126: भले ही कोई ब्राह्मण हो, लेकिन अगर वह अभिवादन का शिष्टता से उत्तर देना नहीं जानता तो वह शूद्र 'अशिक्षित व्यक्ति' ही है।

शूद्र भी पढ़ा सकते हैं- शूद्र भले ही अशिक्षित हों तब भी उनसे कौशल और उनका विशेष ज्ञान प्राप्त किया जाना चाहिए।

2.238: अपने से न्यून व्यक्ति से भी विद्या को ग्रहण करना चाहिए और नीच कुल में जन्मी उत्तम स्त्री को भी पत्नी के रूप में स्वीकार कर लेना चाहिए।

2.241: आवश्यकता पड़ने पर अ-ब्राह्मण से भी विद्या प्राप्त की जा सकती है और शिष्यों को पढ़ाने के दायित्व का पालन वह गुरु जब तक निर्देश दिया गया हो तब तक करे।

ब्राह्मणत्व का आधार कर्म- मनु की वर्ण व्यवस्था जन्म से ही कोई वर्ण नहीं मानती। मनुस्मृति के अनुसार माता-पिता को बच्चों के बाल्यकाल में ही उनकी रुचि और प्रवृत्ति को पहचान कर ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य वर्ण का ज्ञान और प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए भेज देना चाहिए।

कई ब्राह्मण माता-पिता अपने बच्चों को ब्राह्मण ही बनाना चाहते हैं परन्तु इसके लिए व्यक्ति में ब्रह्मणोचित गुण, कर्म, स्वभाव का होना अति आवश्यक है। ब्राह्मण वर्ण में जन्म लेने मात्र से या ब्राह्मणत्व का प्रशिक्षण किसी गुरुकुल में प्राप्त कर लेने से ही कोई ब्राह्मण नहीं बन जाता, जब तक कि उसकी योग्यता, ज्ञान और कर्म ब्राह्मणोचित न हों।

2.157: जैसे लकड़ी से बना हाथी और चमड़े का बनाया हुआ हरिण सिर्फ नाम के लिए ही हाथी और हरिण कहे जाते हैं वैसे ही बिना पढ़ा ब्राह्मण मात्र नाम का ही ब्राह्मण होता है।

2.28: पढ़ने-पढ़ाने से, चिंतन-मनन करने से, ब्रह्मचर्य, अनुशासन, सत्यभाषण आदि व्रतों का पालन करने से, परोपकार आदि सत्कर्म करने से, वेद, विज्ञान आदि पढ़ने से, कर्त्तव्य का पालन करने से, दान करने से और आदर्शों के प्रति समर्पित रहने से मनुष्य का यह शरीर ब्राह्मण किया जाता है।

शिक्षा ही वास्तविक जन्म-मनु के अनुसार मनुष्य का वास्तविक जन्म विद्या प्राप्ति के उपरांत ही होता है। जन्मत: प्रत्येक मनुष्य शूद्र या अशिक्षित है। ज्ञान और संस्कारों से स्वयं को परिकृत कर योग्यता हासिल कर लेने पर ही उसका दूसरा जन्म होता है और वह द्विज कहलाता है। शिक्षा प्राप्ति में असमर्थ रहने वाले शूद्र ही रह जाते हैं।

यह पूर्णत: गुणवत्ता पर आधारित व्यवस्था है, इसका शारीरिक जन्म या अनुवांशिकता से कोई लेना-देना नहीं है।

2.148: वेदों में पारंगत आचार्य द्वारा शिष्य को गायत्री मंत्र की दीक्षा देने के उपरांत ही उसका वास्तविक मनुष्य जन्म होता है। यह जन्म मृत्यु और विनाश से रहित होता है। ज्ञानरुपी जन्म में दीक्षित होकर मनुष्य मुक्ति को प्राप्त कर लेता है। यही मनुष्य का वास्तविक उद्देश्य है। सुशिक्षा के बिना मनुष्य 'मनुष्य' नहीं बनता। इसलिए ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य होने की बात तो छोड़ो जब तक मनुष्य अच्छी तरह शिक्षित नहीं होगा तब तक उसे मनुष्य भी नहीं माना जाएगा।

2.146: जन्म देने वाले पिता से ज्ञान देने वाला आचार्य रूप पिता ही अधिक बड़ा और माननीय है, आचार्य द्वारा प्रदान किया गया ज्ञान मुक्ति तक साथ देता हैं। पिता द्वारा प्राप्त शरीर तो इस जन्म के साथ ही नष्ट हो जाता है।

2.147: माता-पिता से उत्पन्न संतति का माता के गर्भ से प्राप्त जन्म साधारण जन्म है। वास्तविक जन्म तो शिक्षा पूर्ण कर लेने के उपरांत ही होता है।

अत: अपनी श्रेष्ठता साबित करने के लिए कुल का नाम आगे धरना मनु के अनुसार अत्यंत मूर्खतापूर्ण कृत्य है। अपने कुल का नाम आगे रखने की बजाए व्यक्ति यह दिखा दे कि वह कितना शिक्षित है, कितना योग्य है तो बेहतर होगा।

10.4: ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य, ये तीन वर्ण विद्याध्ययन से दूसरा जन्म प्राप्त करते हैं। विद्याध्ययन न कर पाने वाला शूद्र, चौथा वर्ण है। इन चार वर्णों के अतिरिक्त आर्यों में या श्रेष्ठ मनुष्यों में पांचवां कोई वर्ण नहीं है। इसका मतलब है कि अगर कोई अपनी शिक्षा पूर्ण नहीं कर पाया तो वह दुष्ट नहीं हो जाता। उसके कृत्य यदि भले हैं तो वह अच्छा इन्सान कहा जाएगा और अगर वह शिक्षा भी पूरी कर ले तो वह भी द्विज गिना जाएगा। अत: शूद्र मात्र एक विशेषण है, किसी जाति विशेष का नाम नहीं।

'नीच' कुल में जन्मे व्यक्ति का तिरस्कार नहीं-किसी व्यक्ति का जन्म यदि ऐसे कुल में हुआ हो, जो समाज में आर्थिक या अन्य दृष्टि से पनप न पाया हो तो उस व्यक्ति को केवल कुल के कारण पिछड़ना न पड़े और वह अपनी प्रगति से वंचित न रह जाए, इसके लिए भी महर्षि मनु ने नियम निर्धारित किए हैं।

4.141: अपंग, अशिक्षित, बड़ी आयु वाले, रूप और धन से रहित या निचले कुल वाले, इनको आदर और या अधिकार से वंचित न करें। क्योंकि यह किसी व्यक्ति की परख के मापदण्ड नहीं हैं।

प्राचीन इतिहास में वर्ण परिवर्तन के उदाहरण-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र वर्ण की सैद्धांतिक अवधारणा गुणों के आधार पर है, जन्म के आधार पर नहीं। यह बात सिर्फ कहने के लिए ही नहीं है, प्राचीन समय में इसका व्यवहार में चलन था। जबसे इस गुणों पर आधारित वैज्ञानिक व्यवस्था को हमारे दिग्भ्रमित पुरखों ने मूर्खतापूर्ण जन्मना व्यवस्था में बदला है, तब से ही हम पर आफत आ पडी है जिसका सामना आज भी कर रहें हैं।

वर्ण परिवर्तन के कुछ उदाहरण-

(1) ऐतरेय ऋषि दास अथवा अपराधी के पुत्र थे। परन्तु उच्च कोटि के ब्राह्मण बने और उन्होंने ऐतरेय ब्राह्मण और ऐतरेय उपनिषद की रचना की। ऋग्वेद को समझने के लिए ऐतरेय ब्राह्मण अतिशय आवश्यक माना जाता है।

(2) ऐलूष ऋषि दासी पुत्र थे। जुआरी और हीन चरित्र भी थे, परन्तु बाद में उन्होंने अध्ययन किया और ऋग्वेद पर अनुसन्धान करके अनेक आविष्कार किये। ऋषियों ने उन्हें आमंत्रित करके आचार्य पद पर आसीन किया। (ऐतरेय ब्राह्मण 2.19)

(3) सत्यकाम जाबालणिका (वेश्या) के पुत्र थे परन्तु वे ब्राह्मणत्व को प्राप्त हुए।

(4) राजा दक्ष के पुत्र पृषध शूद्र हो गए थे, प्रायश्चित स्वरुप तपस्या करके उन्होंने मोक्ष प्राप्त किया। (विष्णु पुराण 4.1.14)

अगर उत्तर रामायण की मिथ्या कथा के अनुसार शूद्रों के लिए तपस्या करना मना होता तो पृषध ये कैसे कर पाए?

(5) राजा नेदिष्ट के पुत्र नाभाग वैश्य हुए। पुन: इनके कई पुत्रों ने क्षत्रिय वर्ण अपनाया। (विष्णु पुराण 4.1.13)

(6) धृष्ट नाभाग के पुत्र थे परन्तु ब्राह्मण हुए और उनके पुत्र ने क्षत्रिय वर्ण अपनाया। (विष्णु पुराण 4.2.2)

(7) आगे उन्हीं के वंश में पुन: कुछ ब्राह्मण हुए। (विष्णु पुराण 4.2.2)

(8) भागवत के अनुसार राजपुत्र अग्निवेश्य ब्राह्मण हुए।

(9) विष्णुपुराण और भागवत के अनुसार रथोत्तर क्षत्रिय से ब्राह्मण बने।

(10) हारित क्षत्रियपुत्र से ब्राह्मण हुए। (विष्णु पुराण 4.3.5)

(11) क्षत्रियकुल में जन्मे शौनक ने ब्राह्मणत्व प्राप्त किया। (विष्णु पुराण 4.8.1)वायु, विष्णु और हरिवंश पुराण कहते हैं कि शौनक ऋषि के पुत्र कर्म भेद से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र वर्ण के हुए। इसी प्रकार गृत्समद, गृत्समति और वीतहव्य के उदाहरण हैं।

(12) मातंग चांडालपुत्र से ब्राह्मण बने।

ऋषि पुलस्त्य का पौत्र रावण अपने कर्मों से

...शेष पेज 7 पर

भूकम्प ग्रस्त नेपाल के ग्रामीण आंचल नया पानी में वैदिक धर्म प्रचार का अनूठा अभूतपूर्व कार्यक्रम

एक माह तक चले यज्ञ में हजारों ग्रामीणों ने लिया श्रद्धापूर्वक भाग

कन्या गुरुकुल (विद्यालय) के लिए जिन भी बंधुओं ने की भूमि दान की घोषणा– शिलान्यास सम्पन्न

नेपाली वेद का हुआ लोकार्पण

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित "दो मित्रों की बातें" का विमोचन

एक समय था जब महर्षि दयानन्द के सिपाही वैदिक मिशनरी भावनाओं को संजोए हुए विश्व में वैदिक धर्म के प्रचार की पताका लेकर भारत से बाहर निकले।

आर्यसमाज के प्रचारकों ने अनेक देशों में आर्यसमाज की स्थापना की थी। अनेक प्रकार की शारीरिक, मानसिक और आर्थिक कठिनाइयों को चुनौती देते हुए दयानन्द के वीर सैनिकों ने विपरीत साधन विहीन परिस्थितियों में ओ३म् पताका फहराई।

बहुत लम्बे समय बाद यज्ञ का ऐसा विहंगम दृश्य नेपाल के नयापानी में देखने को मिला। मिट्टी पत्थर से पहाड़ी में बने रास्ते में ऊंची पहाड़ी पर जिसे चढ़ने में 2 से 2:30 घंटे लगते हों वहां जाकर शहर से दूर वैदिक धर्म प्रचार, जहां प्रकृति का विनाशकारी ताण्डव कुछ समय पूर्व हुआ था जिससे समस्त जन जीवन अस्त-व्यस्त हो चुका था। उनके बीच जाकर स्वामी सम्पूर्णानन्द जी द्वारा एक माह 3 दिन 21 जनवरी से 23 फरवरी 2016 तक यज्ञ का आयोजन किया गया।

यज्ञ के ब्रह्मा पद का दायित्व स्वयं स्वामी सम्पूर्णानन्द जी ने संभाला, वे अपने साथ वेद पाठी भी लेकर आए। 33 दिन का यज्ञ उसका एवं प्रभाव शायद ही कहीं वर्तमान में दृष्टिगोचर हो। आर्थिक रूप से निर्धन किन्तु भक्ति भाव, श्रद्धा और आत्मीयता से भरपूर स्थानीय नेपाली निवासी दूर-दूर से चलकर भाग लेते रहे।

यह संख्या ढाई हजार तक पहुंच गई। इस अवसर पर नेपाली भाषा में प्रकाशित यजुर्वेद का लोकार्पण भी हुआ। समारोह में 128 नेपाली वेद, सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेद भाष्य भूमिका, महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र आदि हजारों पुस्तकों को जन साधारण ने क्रय किया। निःशुल्क साहित्य वितरण भी किया गया। प्रारंभ व पूर्णाहूति के समय देश के केन्द्रीय मंत्रियों ने भी भाग लिया। कार्यक्रम से प्रभावित श्रद्धालुओं ने रामराज्य का वह दृश्य उपस्थित कर दिखाया। स्वामी जी से उनकी इतनी आत्मियता हो गई थी कि वे अपने आंसू बहाकर विदाई दे रहे थे। समारोह के अन्तिम दिन घोषणा की गई कि शीघ्र ही वहां गुरुकुल एवं आर्यसमाज की स्थापना की जाएगी। निश्चित ही ऐसे अनूठे व सार्थक प्रभावी कार्यक्रमों से ही ये प्रचार संभव हैं। शहरों के साथ-साथ सभी ग्रामीण क्षेत्र में विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। – **विनय आर्य**

वैदिक धर्म प्रचार यज्ञ के अवसर पर निकाली गई शोभायात्रा का नेतृत्व करते स्वामी सम्पूर्णानन्द जी सरस्वती

समापन समारोह के अवसर पर यज्ञ में भाग लेते दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी, नेपाल के केन्द्रीय पर्यटन मंत्री आनन्द मोहन पोखरेल

जन समुदाय को सम्बोधित करते मुख्यातिथि एवं इस अवसर पर मंचस्थ विद्वान सन्यासी एवं अतिथिगण

23 मार्च शहीद दिवस पर विशेष

देश के लिए फांसी के फंदे को चूमने वाले अमर शहीद भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव जी को शत्-शत् नमन

अमर शहीद भगतसिंह का जन्म 27 सितम्बर 1907 को बंगा, लायलपुर, पंजाब (अब पाकिस्तान) में हुआ था व 23 मार्च 1931 को इन्हें इनके दो अन्य साथियों सुखदेव व राजगुरु के साथ फांसी दे दी गयी थी। भगत सिंह का नाम भारत स्वतंत्रता संग्राम में अविस्मरणीय है। भगर सिंह देश के लिए जिये और देश के लिए ही शहीद भी हो गये।

24 अगस्त 1908 को पुणे के खेड़ा गांव(जिसका नाम अब राजगुरु नगर है।) में पैदा हुए शहीद राजगुरु का पूरा नाम श्री शिवराम हरि राजगुरु था। आपके पिता का नाम श्री हरि नारायण और माताश्री का नाम श्रीमती पार्वती

बाई था। भगर सिंह और सुखदेव के साथ ही राजगुरु को भी 23 मार्च 1931 को फांसी दी गयी थी।

राजगुरु स्वराज मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और मैं उसे हासिल करके रहूंगा का उद्घोष करने वाले लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के विचारों से अत्यधिक प्रभावित थे। सुखदेव जी का जन्म 15 मई, 1907 को पंजाब में हुआ था। 23 मार्च 1931 को सेंट्रल जेल, लाहौर में भगत सिंह व राजगुरु के साथ इन्हें भी फांसी दी गयी थी। सुखदेव जी का नाम भारत के अमर क्रांतिकारियों और शहीदों मे गिना जाता है। आपने अल्पायु में ही देश के लिए जान कुर्बान कर दी। सुखदेव जी का पूरा नाम सुखदेव थापर था। इनका नाम भगत सिंह और राजगुरु के साथ जोड़ा जाता है और इन तीनों की तिकड़ी भारत के इतिहास में सदैव याद रखी जाएगी। तीनों देशभक्त क्रांतिकारी आपस में अच्छे मित्र थे और देश की स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वत्र न्योछावर कर देने वालों में से थे। इन तीनों वीर नौजवानों की विशेष बात यह थी कि ये तीनों ही आर्य समाज के मन्तव्यों को मानने वाले वीर योद्धा थे जो कभी भी यज्ञ करने से नहीं चूकते थे।

23 मार्च 1931 को भारत के इन तीनों वी नौजवानों को एक साथ फांसी दी गयी इसी कारण से आज भी 23 मार्च को शहीदी दिवस के रूप में याद किया जाता है किया जाता रहेगा।

आर्यसमाज दक्षिण अफ्रीका का 110वां वार्षिकोत्सव एवं आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका का 90वां स्थापना दिवस समारोह सम्पन्न

सार्वदेशिक सभा दिल्ली की ओर से श्री विनय आर्य एवं श्री वाचोनिधि आर्य ने किया प्रतिनिधित्व

तीन दिवसीय कार्यक्रम डरबन में सम्पन्न, सुमधुर संगीत, 51 कुण्डीय भव्य यज्ञ, गोष्ठी एवं अन्य अनेक कार्यक्रमों की प्रस्तुति

कार्यक्रम में कीनिया, युगांडा, मॉरीशस, भारत एवं दक्षिण अफ्रीका के विभिन्न शहरों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया

डरबन आर्य समाज प्रतिनिधियों के साथ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमंत्री श्री वाचोनिधि आर्य एवं उपमंत्री व महामंत्री दि.आ.प्र. सभा श्री विनय आर्य

स्थानीय बच्चों के साथ विभिन्न देशों से पधारे आर्य प्रतिनिधिगण

आर्य समाज दक्षिण अफ्रीका का 110वां तथा आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका का 90वां स्थापना दिवस गत 12 से 14 फरवरी 2016 को डरबन में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर देश-विदेश की आर्य समाजों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। समारोह में सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा की ओर से श्री विनय आर्य तथा श्री वाचोनिधि आर्य ने भारत से प्रतिनिधित्व किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वित्तमंत्री श्री प्रवीण गोरधन ने अपने उद्बोधन में कहा कि 'समाज में प्रजातन्त्र को मजबूत करने तथा राष्ट्र में नैतिकता, ईमानदारी एवं आध्यात्मिकता को प्रचारित एवं प्रसारित करने के लिए आर्य समाज जैसी संस्थाओं को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए।' श्री प्रवीण गोरधन ने आर्य समाज द्वारा किये जाने वाले जन-कल्याण कार्यों में भरपूर सहयोग करने का आश्वासन दिया। कार्यक्रम में उपस्थित हजारों आर्यजनों की उपस्थिति में सभा प्रधान श्री बिसराम रामविलास ने एक महत्त्वाकांक्षी प्रोजेक्ट 'तृप्ति' के विषय में बताते हुए कहा कि यह प्रोजेक्ट उन ग्रामीण क्षेत्रों को ट्यूबेल लगाकर जहां सूखा पड़ा है और ग्रामीणों को पानी उपलब्ध नहीं है उन्हें नि:शुल्क पानी उपलब्ध करायेगा। सभा प्रधान ने आर्य समाज के 110 वर्ष के इतिहास पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि कैसे उनके पूर्वजों ने आर्य समाज का यह पौधा रोपित किया था जो आज एक वटवृक्ष बनकर दक्षिण अफ्रीका के लोगों की सेवा के लिए कृत संकल्पित है। समारोह में कई लघु पुस्तकों का विमोचन किया गया। समारोह में 51 कुण्डीय यज्ञ एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। सभा प्रतिनिधियों ने 100 वर्ष पुरानी सेवा ईकाई आर्य बैनोविलंट होम में बच्चों से भेंट की एवं यज्ञ में स्थानीय लोगों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया। 'तृप्ति' प्रोजेक्ट के लिए दिल्ली की ओर से श्री विनय आर्य ने 20 हजार रेन्ड व वाचोनिधि आचार्य जी ने 10 हजार रेन्ड का सहयोग करने की घोषणा की एवं विभिन्न देशों से पधारे प्रतिनिधियों तथा दक्षिण अफ्रीका की कई संस्थाओं ने यथा योग्य सहयोग करने की घोषणा की। इस अवसर पर विशिष्ठ अतिथियों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। समारोह में भारत से स्वामी आर्यवेश जी ने भी भाग लेकर अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

51 कुंडीय यज्ञ में स्थानीय अफ्रीकी नागरिकों ने लिया बढ़-चढ़कर भाग

मनुस्मृति को जलाना अज्ञानता की पराकाष्ठा- मात्र राजनैतिक हथकंडा

जेएनयू परिसर में मनुस्मृति को जलाना एक दुर्भाग्यपूर्ण और अज्ञानता का परिचायक है। महर्षि मनु विशुद्ध सनातन धर्म के अनुयायी थे जिसमें ऊंच नींच, जाति पांत, स्त्री, पुरुष, देश काल के भेदभाव का लेश मात्र भी कहीं कोई भाव नहीं रहता है। अज्ञानता के कारण ही यह हो रहा है। वास्तव में जिस प्रकार आज समाज सत्य ज्ञान से दूर होकर सम्प्रदायों को धर्म मान रहा है, उसी प्रकार सुनी सुनाई और सनातन धर्म की मूल भावना व आस्था को क्षति पहुंचाने वालों ने मनु के लिए जाति वाचक और महिला विरोधी शब्द का प्रयोग किया है।

वास्तव में मनु का पूरा विचार वेद जो ईश्वरीय ज्ञान है, उस पर आधारित है, जिसमें मानव मानव के बीच किसी प्रकार की विषमता का एक भी शब्द नहीं है। मनु ने ही नारी जाति के सम्मान में यह सन्देश समाज को दिया था ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:'' सनातन संस्कृति के पोषक मनु कभी भी इस प्रकार की बातों का समर्थन नहीं कर सकते। नारी का सम्मान वैदिक संस्कृति में पुरूषों से भी अधिक देते हुए वैदिक विचारधारा में लिखा गया ''मातृमान पितृमान आचार्यवान'' माता को पहला स्थान दिया। इसी प्रकार मानव निर्माण में माता का ही निर्माण कहते हुए लिखा माता निर्माता भवति''। इस प्रकार के सम्मानजनक और महत्त्वपूर्ण विचारों से प्रभावित, आचार्य मनु नारी जाति के विरूद्ध कैसे लिख सकते हैं ? यह दोष जानबूझकर उन लोगों ने जो सनातन

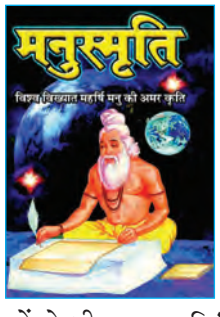

धर्म को बदनाम करना चाहते थे, उन्होंने मनु के विचारों में ऐसी मिलावट की है। मनु के संबंध में विद्वान लेखक डॉ- सुरेन्द्र कुमार कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार द्वारा लिखी गई ''विशुद्ध मनुस्मृति'' को पढ़कर देखा जा सकता है और मनु के नारी जाति के प्रति सम्मानजनक भावों को पढ़ा जा सकता है ताकि भ्रांति का स्वत: निराकरण हो जावेगा।

वास्तव में नारी जाति की गरिमा को महत्त्व देने का जो विचार रखते हैं वह सराहनीय है किन्तु विरोध करना है तो उनका करो जिनमें नारी को पशु तुल्य बताया है, नारी को भोग की वस्तु कहा है और नारी को गुलाम बनाकर रखा है, तब इसे सच्चा पुरूषार्थ कहा जा सकता है। यह कार्य 5000 वर्षों के पश्चात् यदि किसी ने किया है तो वह महर्षि दयानन्द सरस्वती हैं, इसकी पुष्टि करना है तो महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश के 13वें, 14 वें समुल्लास को पढ़कर की जा सकती है।

यह ध्यान देने योग्य बात है कि सनातन संस्कृति को दूषित करने का प्रयास आज से नहीं वर्षों से हो रहा है और इस प्रकार के कई षड़यन्त्र पकड़े गये, यह भी उसी दुष्कृत्य का परिणाम है। पहले किसी भी विचार व सिद्धान्तों को पढ़े, समझे फिर उसके संबंध में निर्णय लेना उचित होगा। सुनी सुनाई बातों पर या अधूरे ज्ञान से किसी के संबंध में सही निर्णय नहीं लिया जा सकता है। **-प्रकाश आर्य, महामन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली**

Continue from last issue

Glimpses of the Atharva Veda

-Priyavrata Das

Weapons

"Missiles designed for fighting iron mouthed, needle mouthed, combs with sharp teeth, flesh-piercing, swift as strong wind-smash the enemies with "Trisandhi" the three jointed thunder bolt."

"Let the white-footed columns of army tie together, let them encircle the enemy from the four corners. May you be equipped with "Trisandhi" and be cause of their alarm."

"Keep the enemy enveloped with smoke, confounded by pain of eyes and ears. Let the yonder host keep in terrible state when the victor raises the flag."

अयोमुखाः सूचीमुखा अथो विकंतीमुखाः।

कृव्यादो वातरंहस आ सजन्त्वमित्रान्वज्रेण विषन्धिना।। (Av.xi.10.3)

Ayomukhah sucimukha atho vikankatimukhah.

Kravyado vataramhasa a sajantva mitranvajrena trisandhina..

शितिपदी सं द्यतु शरव्ये श्यं चतुष्पदी।

कृत्येऽमित्रेभ्यो भव त्रिषन्धेः सह सेनया।। (Av.xi.10.6)

Sitipadi sam dyatu saravye ayam catuspadi.

krtyemitrebhyo bhava trisandheh saha senaya..

धूमाक्षी सं पततु कृधुकर्णी च क्रोशतु।

त्रिषन्धेः सेनया जिते अरुणाः सन्तु केतवः।। (Av.xi.10.7)

Dhumaksi sam patatu krdhukarni ca krosatu.

trisandheh senaya jite arunah santu ketavah..

Human Body, the Abode of Deities

"Indeed, one who knows man thinks, 'This is Brahman, for all the deities are enshrined in him, as cows in a cow-shed."

Human body has been described as a cow-shed in the present verse. The cows enter the cattle-shed occupying their assigned places. it does not become neessary to drag them to the poles. They quickly run to their respective posts as if they have fixed their own living space. Similarly the divine forces of Creation favour the human body for their settlement. They are divine as they provide life-power without taking anything in exchange. Fire has taken shape as speech having entered the mouth, Air as vital prana inside the nostrils, Sun as vision in the eyes, Moon as mind in the heart, the medicinal plants in the skin in shape of hairs, Water as semen and likewise all the divinities find their home in the organs of human body. Thus the body becomes the abode of all blissful deities. It is a samll scale copy of the Universe. When soul, the leading spirit, leaves the body, these divine forces follow him.

O man, practise purity in thought, speech and action because you are the dweller in the temple of godhood. Adore the divine protectors who sustain and serve you throughout your life.

तस्माद्वै विद्वान्पुरुषमिदं ब्रह्मेति मन्यते।

सर्वा ह्यस्मिन्देवता गावो गोष्ठ इवासते।। (Av.xi.8.32)

Tasmadvai vidvanpurushmidam brahmeti manyate.

sarva hi asmindevata gavo gostha evasate..

The Inverted Pot

Chapter x, hymn 8, verse 9 metaphorically speaks of an inverted pot. This has been installed in the uppermost part of every human being as skull, the bony framework of the head containing the brain, the centere of the nervous system. The brain, the most pwerful organ finds place in an inverted pot, yet is safe and sturdy. In ornamental language the verse says,, "This is a bowl with opening on the sideways and bottom upward; glory of all forms is deposited in it. Therein sit together the seven seers, who have become the protectors of this great one."

The holse of ears, eyes, nose, mouth symbolise the seven sages. They are benevolent guards of the human body. When the guard become careless, wealth of the body also gets lost. Man should keep them ever alert, pure and strong engaging them in their duties under the control of mind. In the cryptic languge of the Vadas the two ears are named as Gautama and Bharadvaja, the two eyes as Visvamitra and Jamadagni, the two nostrils as Vasistha and Kasyapa and the mouth as Agni.

Indeed, it is a miracle that the best and foremost part of the human body exists in inverted shape with the organs of sense seated sidewise.

Thiryagbilascamasa urdhvabudhnastasminyaso nihitam visvarupam.

tadasata rsayah sapta sakam ye asya gopa mahato babhubuh..

तिर्यग्बिलश्चमस ऊर्ध्वबुध्नस्तस्मिन्यशो निहितं विश्वरूपम्।

तदासत ऋषयः सप्त साकं ये अस्य गोपा महतो बभूवुः।। (Av.x.8.9)

To Be Continue...

संस्कृतम् सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम्

सतां सज्जनानां संगतिः सत्संगतिः कथ्यते। ये सज्जनाः साधवः पवित्रात्मनाः सन्ति, तेषां संगत्या मनुष्यः सज्जनः साधुः शिष्टश्च भवति। ये दुर्जनाः सन्ति तेषां संगत्या मनुष्यो दुर्जनो भवति, पतनं विनाशं च प्राप्नोति। ये सज्जनैः सह उपविशन्ति उत्तिष्ठन्ति खादन्ति पिबन्ति च, ते तथैव स्वभावं धारयन्ति। मनुष्यस्योपरि संगतेः महान् प्रभावो भवति। यादृशैः पुरुषैः सह स निवसति, तादृश एव स भवति। एत एवोच्यते-

संसर्गजा दोषगुणा भवन्ति।।1।।

हीयते हि मतिस्तात, हीनैः सह समागमात्।

समैश्च समतामेति, विशिष्टैश्च विशिष्टताम्।।2।।

सज्जनानां संगत्या मनुष्य उन्नति प्राप्नोति। तस्य विद्या कीर्तिश्च वर्धेते। अतएव नीतिकारैः वारंवारम् एतदुक्तमस्ति यत्-

सद्भिरेव सहासीत, सद्भिः कुर्वीत संगतिम्।

सद्भिर्विवादं मैत्रीं च, नासद्भिः किंचिदाचरेत्।।3।।

पण्डितैः सह सांगत्यं, पण्डितैः सह संकथाः।

पण्डितैः सह मित्रत्वं, कुर्वाणो नावसीदति।।4।।

बाल्यकाले विशेषतो बालकस्योपरि संसर्गगस्य प्रभावो भवति। बालको यादृशैः बालकैः सह संगति करिष्यति तादृश एव भविष्यति। अतो बाल्यकाले दुर्जनैः सह संगतिः कदापि न करणीया। दुर्जनानां संसर्गेण बहवो हानयो भवन्ति, यथा- दुर्जनसंसर्गेण मनुष्योऽसद्वृत्तो भवति, दुर्विचारयुक्तो भवति, तस्य बुद्धिर्दूषि भवति, अतः बुद्धिः क्षीयते, दुर्व्यसनग्रस्तो भवति अतस्तस्य शरीरं क्षीणं निर्बलं च भवति, तस्य कीर्तिः नश्यति, सर्वत्रानादरो भवति, सर्वत्राप्रतिष्ठाभाजनं च भवति।

अतः स्वयशोवृद्धये ज्ञानवृद्धये सुखस्य शान्तेश्च प्राप्तये सवैरपि सर्वदा सत्संगतिः करणीया, दुर्जनसंगतिश्च हेया। अतएव सत्संगतिमाहात्म्ये एवम् उच्यते-

जाड्यं धियो हरति सिन्चति वाचि सत्यं, मानोन्नति दिशति पापमपाकरोति।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्ति, सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम्।।5

साभार : रचनानुवादकौमुदी

रचनानुवादकौमुदी

(डॉ. कपिलदेव द्विवेदी)

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन हेतु आज ही अपना ऑर्डर प्रेषित करें या मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में कक्षा 1 से 10+2 तक नवीन प्रवेश प्रारम्भ

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार जोकि पूर्णतः आवासीय एवं भारतीय संस्कृति पर आधारित शिक्षण संस्थान है में कक्षा 1 से 10+2 तक नवीन प्रवेश प्रारम्भ हैं जिनकी प्रवेश परीक्षा दिनांक 2,16 व 30 अप्रैल 2016 को होगी। कक्षा प्रथम (1) में प्रवेश के लिये छात्र की आयु 6 वर्ष होनी चाहिए। आयु प्रमाण पत्र होना अनिवार्य है।

-डॉ. विजेन्द्र शास्त्री, मुख्याध्यापक

आर्य समाज हरी नगर का 43वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज हरी नगर दिल्ली का 43वां वार्षिकोत्सव 26 से 28 फरवरी 2016 को ऋग्वेद के अष्टम् मंडल की पूर्णाहूति के साथ सम्पन्न हुआ। यज्ञ ब्रह्मा महात्मा राम किशोर वैद्यजी व ऋत्विज् अशोक कुमार शास्त्री जी ने यज्ञ सम्पन्न कराया। कार्यक्रम मे आचार्य अमर देव शास्त्री के प्रवचन व श्री हरी शंकर व रामा शंकर ने भजन प्रस्तुत किये। समारोह में श्री ओम प्रकाश शर्मा का सम्मान किया गया। बच्चों को आर्य समाज से जोड़ने के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये व उन्हें पुरस्कार प्रदान किये गये। अन्त में प्रधान श्रीमती राजेश्वरी आर्या ने सभी आगन्तुकों का धन्यवाद किया।

-श्रीपाल सिंह आर्य, मन्त्री

आर्य समाज अजमेर में ऋषि दयानन्द बोधोत्सव समारोह सम्पन्न

आर्य समाज अजमेर में 6 मार्च 2016 को ऋषि दयानन्द बोधोत्सव पूर्व सांसद प्रो. रासासिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि साध्वी डॉ. उत्तमा यति ने अपने उद्बोधन में कहा कि 'ऋषि दयानन्द ने संसार में व्याप्त अज्ञान व अंधकार को समाप्त करने के लिए जगह-जगह जाकर अनेक कष्ट सहन करके वेद ज्ञान का प्रचार किया।' विशिष्ट अतिथि विद्वान मदन सिंह चौहान ने वेद मंत्र की व्याख्या की। डॉ. मोक्षराज, आचार्य अमरसिंह शास्त्री, प्रो. रासासिंह, श्री चन्दराम आर्य, भागचन्द गर्ग, लालचन्द आर्य, शकुन्तला जी, प्रभा शास्त्री, मनीषा शास्त्री, भरत भूषण ने अपने-अपने विचार प्रकट किये। कार्यक्रम के अन्त में कर्मवीर आर्य, चन्दराम आर्य, तथा अजमेर स्थित आर्य समाजों के पदाधिकारियों को सम्मान किया गया।

-कल्याण सिंह आर्य

आर्य सन्देश पत्र के स्वामित्व आदि सम्बन्धी विवरण

फार्म 4 नियम 8

(प्रेस एण्ड रजिस्ट्रेशन आफ बुक एक्ट)

प्रकाशक का नाम	: दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
प्रकाशन की अवधि-	: साप्ताहिक
प्रकाशन का समय	: प्रति बृहस्पतिवार एवं शुक्रवार
मुद्रक का नाम	: धर्मपाल आर्य
क्या भारत का नागरिक है	: हाँ
मुद्रक का पता	: दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
प्रकाशक का पता	: पूर्ववत्
सम्पादक का नाम	: धर्मपाल आर्य
क्या भारत का नागरिक है	: हाँ
सम्पादक का पता	: पूर्ववत्
उन व्यक्तियों के नाम पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा समस्त पूंजी के 1 प्रतिशत से अधिक के साझेदार/हिस्सेदार हों	: दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

मैं धर्मपाल आर्य इस लेख पत्र के द्वारा घोषणा करता हूं कि उपर्युक्त विवरण जहां तक मेरा ज्ञान और विश्वास है, सही है। **धर्मपाल आर्य, प्रकाशक एवं मुद्रक**

पृष्ठ 3 का शेष

क्या महर्षि मनु...

राक्षस बना।

(13) राजा रघु का पुत्र प्रवृद्ध राक्षस हुआ।

(14) त्रिशंकु राजा होते हुए भी कर्मों से चांडाल बन गए थे।

(15) विश्वामित्र के पुत्रों ने शूद्र वर्ण अपनाया। विश्वामित्र स्वयं क्षत्रिय थे परन्तु बाद उन्होंने ब्राह्मणत्व को प्राप्त किया।

(16) विदुर दासी पुत्र थे। तथापि वे ब्राह्मण हुए और उन्होंने हस्तिनापुर साम्राज्य का मंत्री पद सुशोभित किया।

(17) वत्स शूद्र कुल में उत्पन्न होकर भी ऋषि बने (ऐतरेय ब्राह्मण 2.19)

(18) मनुस्मृति के प्रक्षिप्त श्लोकों से भी पता चलता है कि कुछ क्षत्रिय जातियां, शूद्र बन गई। वर्ण परिवर्तन की साक्षी देने वाले यह श्लोक मनुस्मृति में बहुत बाद के काल में मिलाए गए हैं। इन परिवर्तित जातियों के नाम हैं पौण्ड्रक, औड्र, द्रविड, कम्बोज, यवन, शक, पारद, पल्हव, चीन, किरात, दरद, खश।

(19) महाभारत अनुसन्धान पर्व (35.17-18) इसी सूची में कई अन्य नामों को भी शामिल करता है मेकल, लाट, कान्वशिरा, शौण्डिक, दार्व, चौर, शबर, बर्बर।

(20) आज भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और दलितों में समान गोत्र मिलते हैं । इससे पता चलता है कि यह सब एक ही पूर्वज, एक ही कुल की संतान हैं। लेकिन कालांतर में वर्ण व्यवस्था गड़बड़ा गई और यह लोग अनेक जातियों में बंट गए।

शूद्रों के प्रति आदर-मनु परम मानवीय थे। वे जानते थे कि सभी शूद्र जानबूझ कर शिक्षा की उपेक्षा नहीं कर सकते। जो किसी भी कारण से जीवन के प्रथम पर्व में ज्ञान और शिक्षा से वंचित रह गया हो, उसे जीवन भर इसकी सजा न भुगतनी पड़े इसलिए वे समाज में शूद्रों के लिए उचित सम्मान का विधान करते हैं। उन्होंने शूद्रों के प्रति कभी अपमान सूचक शब्दों का प्रयोग नहीं किया, बल्कि मनुस्मृति में कई स्थानों पर शूद्रों के लिए अत्यंत सम्मान जनक शब्द आए हैं। मनु की दृष्टि में ज्ञान और शिक्षा के अभाव में शूद्र समाज का सबसे अबोध घटक है, जो परिस्थितिवश भटक सकता है। अत: वे समाज को उसके प्रति अधिक सहृदयता और सहानुभूति रखने को कहते हैं।

कुछ और उदात्त उदाहरण देखें- 3.112: शूद्र या वैश्य के अतिथि रूप में आ जाने पर, परिवार उन्हें सम्मान सहित भोजन कराए।

3.116: अपने सेवकों (शूद्रों) को पहले भोजन कराने के बाद ही दंपत्ति भोजन करें।

2.137: धन, बंधु, कुल, आयु, कर्म, श्रेष्ठ विद्या से सम्पन्न व्यक्तियों के होते हुए भी वृद्ध शूद्र को पहले सम्मान दिया जाना चाहिए।

मनुस्मृति वेदों पर आधारित-वेदों को छोड़कर अन्य कोई ग्रंथ मिलावटों से बचा नहीं है। वेद प्रक्षेपों से कैसे अछूते रहे, जानने के लिए वेदों में परिवर्तन क्यों नहीं हो सकता?' पढ़ें। वेद ईश्वरीय ज्ञान है और सभी विद्याएँ उसी से निकली हैं। उन्हीं को आधार मानकर ऋषियों ने अन्य ग्रंथ बनाए। वेदों का स्थान और प्रमाणिकता सबसे ऊपर है और उनके रक्षण से ही आगे भी जगत में नए सृजन संभव हैं। अत: अन्य सभी ग्रंथ स्मृति, ब्राह्मण, महाभारत, रामायण, गीता, उपनिषद, आयुर्वेद, नीतिशास्त्र, दर्शन इत्यादि को परखने की कसौटी वेद ही हैं और जहां तक वे वेदानुकूल हैं वहीं तक मान्य हैं।

मनु भी वेदों को ही धर्म का मूल मानते हैं (2.8-2.11)

2.8: विद्वान मनुष्य को अपने ज्ञान चक्षुओं से सब कुछ वेदों के अनुसार परखते हुए, कर्त्तव्य का पालन करना चाहिए।

इससे साफ है कि मनु के विचार, उनकी मूल रचना वेदानुकूल ही है और मनुस्मृति में वेद विरुद्ध मिलने वाली मान्यताएं प्रक्षिप्त मानी जानी चाहिए।

शूद्रों को भी वेद पढ़ने और वैदिक संस्कार करने का अधिकार-वेद में ईश्वर कहता है कि मेरा ज्ञान सबके लिए समान है चाहे पुरुष हो या नारी, ब्राह्मण हो या शूद्र सबको वेद पढ़ने और यज्ञ करने का अधिकार है।

देखें-यजुर्वेद 26.1, ऋग्वेद 10.53.4, निरुक्त 3.8 इत्यादि और मनुस्मृति भी यही कहती है। मनु ने शूद्रों को उपनयन (विद्या आरंभ) से वंचित नहीं रखा है। इसके विपरीत उपनयन से इंकार करने वाला ही शूद्र कहलाता है।

वेदों के ही अनुसार मनु शासकों के लिए विधान करते हैं कि वे शूद्रों का वेतन और भत्ता किसी भी परिस्थिति में न काटें (7.12-126, 8.216)।

संक्षेप में, मनु को जन्मना जाति व्यवस्था का जनक मानना निराधार है। इसके विपरीत मनु मनुष्य की पहचान में जन्म या कुल की सख्त उपेक्षा करते हैं। मनु की वर्ण व्यवस्था पूरी तरह गुणवत्ता पर टिकी हुई है।

प्रत्येक मनुष्य में चारों वर्ण हैं ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। मनु ने ऐसा प्रयत्न किया है कि प्रत्येक मनुष्य में विद्यमान जो सबसे सशक्त वर्ण है जैसे किसी में ब्राह्मणत्व ज्यादा है, किसी में क्षत्रियत्व, इत्यादि का विकास हो और यह विकास पूरे समाज के विकास में सहायक हो। महर्षि मनु पर जातिवाद का समर्थक होने का आक्षेप लगाना मूर्खता है क्योंकि दोष मिलावट करने वालो का हैं न की मनु महर्षि का।

-डॉ. विवेक आर्य

जम्मू-कश्मीर में प्रथम बार

आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन जम्मू में

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्णय एवं निर्देशानुसार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा जम्मू-कश्मीर में प्रथम बार आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन आगामी 27 मार्च 2016 रविवार को प्रात: 10 बजे से आर्य समाज, बक्शी नगर, जम्मू में आयोजित किया जा रहा है।

आर्य परिवारों से आग्रहपूर्वक अनुरोध है कि अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के आर्य परिवारों से सम्बन्ध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्र अतिशीघ्र रजिस्ट्रेशन करवाने का कष्ट करें।

सम्मेलन में भाग लेने हेतु बाहर से आने वाले आर्य परिवारों के आवास, चाय-नाश्ता व दोपहर के भोजन की नि:शुल्क व्यवस्था कार्यक्रम स्थल पर रहेगी।

रजिस्ट्रेशन शुल्क मात्र 300/-

अधिक जानकारी के लिए निम्न महानुभावों से सम्पर्क करें-

श्री अर्जुनदेव चड्ढा,
राष्ट्रीय संयोजक, मो. 9414187428

श्री राकेश चौहान	**श्री भारत भूषण आर्य**	**श्री रविकांत गुप्ता**	**श्री योगेश गुप्ता,**
प्रधान,	उपप्रधान,	मंत्री,	कोषाध्यक्ष,
जम्मू-कश्मीर आर्य प्रतिनिधि सभा,	जम्मू-कश्मीर आर्य प्रतिनिधि सभा,	जम्मू-कश्मीर आर्य प्रतिनिधि सभा,	जम्मू-कश्मीर आर्य प्रतिनिधि सभा,
मो. 9419206881	मो. 9419133884	मो. 9419188830	मो. 9419192144

भजन संध्या एवं प्रवचन कार्यक्रम आयोजित

दिनांक 4 मार्च को आर्य समाज मंदिर रोहताश नगर दिल्ली में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज के जन्मोत्सव पर भजन संध्या एवं प्रवचनों के कार्यक्रम आयोजित हुए। इस अवसर पर दिल्ली के कर्मठ कार्यकर्त्ता आर्य नेता भी पतराम त्यागी जी का उनकी आर्य समाज की सेवाओं के लिए भी इभिमन्यु चावला जी मंत्री, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली (राज्य) के द्वारा शाल ओड़ा कर नागरिक अभिनन्दन किया गया।

आर्य समाज, विशाखा एन्क्लेव, पी.यू. ब्लॉक पीतमपुराके तत्त्वावधान में

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्मोत्सव कार्यक्रम सम्पन्न

आर्य समाज, विशाखा एन्क्लेव, पी.यू. ब्लॉक पीतमपुरा, दिल्ली के तत्त्वावधान में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्मोत्सव 13 मार्च 2016 को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जिसमें यज्ञब्रह्मा आचार्य भूपेन्द्र शास्त्री, मुख्यातिथि राजीव मुखी, समाज सेवी, विशिष्ट अतिथि बन्दना कुमारी जी (विधायक, उपाध्यक्षा दिल्ली विधान सभा), मुख्य यज्ञमान सुशील घई जी रहे।

आर्य समाज सैक्टर 22 ए, चण्डीगढ़ में भव्य समारोह संपन्न

आर्य समाज, सैक्टर 22-ए, चण्डीगढ़ महर्षि दयानन्द सरस्वती का 192वां जन्म दिवस एवं महाशिवरात्रि ऋषि बोधोत्सव समारोह तथा 62वां वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में बड़े उत्साह व उल्लास पूर्वक भव्य समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन 3 मार्च 2016 से 07 मार्च सोमवार तक धूमधाम से हुआ।

आर्य समाज रामकृष्णपुरम का 47वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज रामकृष्णपुरम, सैक्टर 9, नई दिल्ली-110022 का 47वां वार्षिकोत्सव रविवार दिनांक 20 मार्च 2016 को श्री सत्यानंद आर्य प्रधान, आर्य समाज पंजाबी बाग, पश्चिमी की अध्यक्षता में आयोजित होगा। जिसमें यज्ञ के ब्रह्म आचार्य मोहनकुमार शास्त्री व मुख्यातिथि श्रीमती बरखासिंह, पूर्व मंत्री (दिल्ली सरकार) होंगी।

माता चन्नन देवी आर्य कन्या गुरुकुल का उद्घाटन समारोह 20 मार्च 2016 को

माता चन्नन देवी आर्य कन्या गुरुकुल का उद्घाटन समारोह महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.) की अध्यक्षता में रविवार 10 बजे 20 मार्च 2016 को पिल्लुखेड़ा मण्डी, जीन्द (हरियाणा) में होगा। जिसमें मुख्यातिथि चौ. बीरेन्द्र सिंह (केन्द्रिय ग्रामीण विकास मंत्री) व विशिष्ट अतिथि श्रीमती प्रेमलता (विधायक उचाना) होंगी। **-सत्यपाल आर्य**

आर्य उपदेशक एवं पुरोहित प्रशिक्षण शिविर

आर्य समाज प्रीत विहार दिल्ली-110092 के तत्त्वावधान में दिनांक 1 से 16 अप्रैल 2016 तक आर्य उपदेशक एवं पुरोहित प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविरोपरांत सफल शिविरार्थियों को निश्चित सेवा का अवसर दिया जाएगा। शिविरार्थी बनने के लिए गृहकार्य- 1) दूरभाष 011-22504658 पर प्रात: 8:30 से सायं 6 बजे के मध्य समय लेकर अपना अस्थाई पंजीकरण कराना, 2) पंजीकरण शुल्क 500 रुपये भेजने की व्यवस्था करना, 3) संस्कार विधि व सत्यार्थ प्रकाश, ऋतु अनुसार बिस्तर-वस्त्र साथ लाना, 4) 1 अप्रैल को शाम तक शिविर स्थल पर पहुंचना, 5) प्रचारक बनने हेतु मन को तैयार करना। - **आयोजक सुरेंद्र कुमार रैली, प्रधान**

साप्ताहिक आर्य सन्देश

14 मार्च 2016 से 20 मार्च, 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 17 मार्च 2016/ 18 मार्च, 2016

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 16 मार्च, 2016

आप सब सादर सपरिवार आमन्त्रित हैं। कृपया प्रीतिभोज अवश्य ग्रहण करें।

निवेदक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा • आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली • समस्त एम. डी. एच. परिवार

15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली की समस्त आर्य संस्थाएँ

MAHASHAYAN DI HATTI PVT. LTD.
दिल्ली, गुड़गाँव, करोलबाग, नागौर

प्रतिष्ठा में,

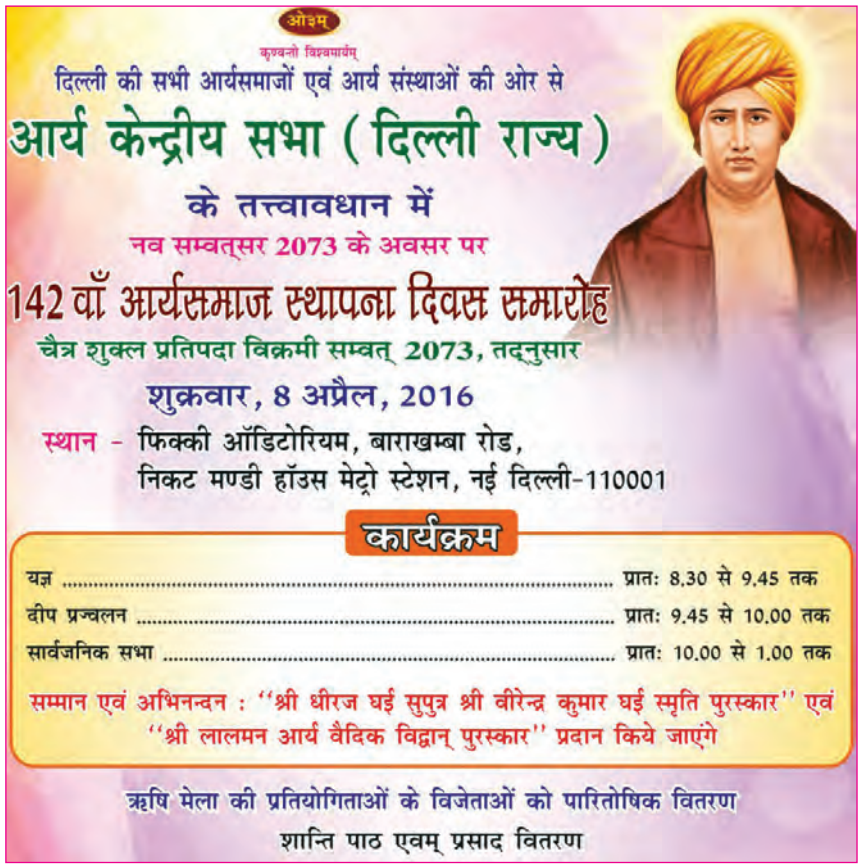

अनाथ व निराश्रित बालिकाओं के प्रवेश हेतु सूचना

आर्य विद्या मन्दिर देसराज परिसर, सी ब्लॉक, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली में निम्न आर्य वर्ग की अनाथ व निराश्रित बालिकाओं का प्रवेश छठी से नवीं कक्षा तक प्रारम्भ हो गया है। कार्यालय में आकर मूल दस्तावेज दिखाकर प्रवेश फार्म प्राप्त करें। निवास, भोजन, शिक्षा आदि की नि:शुल्क व्यवस्था है। सम्पर्क करें -

श्रीमती सुमन कपूर, 01126316604, 26840229

प्रवेश प्रारम्भ

आर्य अनाथालय के वीरेश प्रताप परिसर 1488 पटौदी हाउस दरियागंज, नई दिल्ली में कार्यरत रानी दत्ता आर्य विद्यालय व सहयोगी संस्थाएं आर्य बाल गृह और आर्य कन्या सदन में निम्न आय वर्ग के अनाथ व निराश्रित बालक- बालिकाओं का नर्सरी से तीसरी तक प्रवेश प्रारम्भ है। मूल दस्तावेज दिखाकर प्रवेश फार्म प्राप्त करें। निवास, भोजन, शिक्षा आदि की नि:शुल्क व्यवस्था है। सम्पर्क करें- **श्री राजकुमार सिंह,** 01123260428

प्रवेश प्रारम्भ

गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल, मुजफ्फरनगर उ. प्र. में नये सत्र के प्रवेश 1 अप्रैल 2016 से प्रारम्भ हो रहे हैं। मध्यमा स्तर की परीक्षाएं उ.प्र. मा. संस्कृत शिक्षा परिषद लखनऊ तथा महाविद्यालय स्तर का पाठ्यक्रम सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी द्वारा संचालित है। संस्था में प्रवेश के लिए छात्र 5वीं कक्षा उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। सम्पर्क करें **-प्रेम शंकर मिश्र, प्रधानाचार्य**

मो. 9411481624 एवं 9412595542

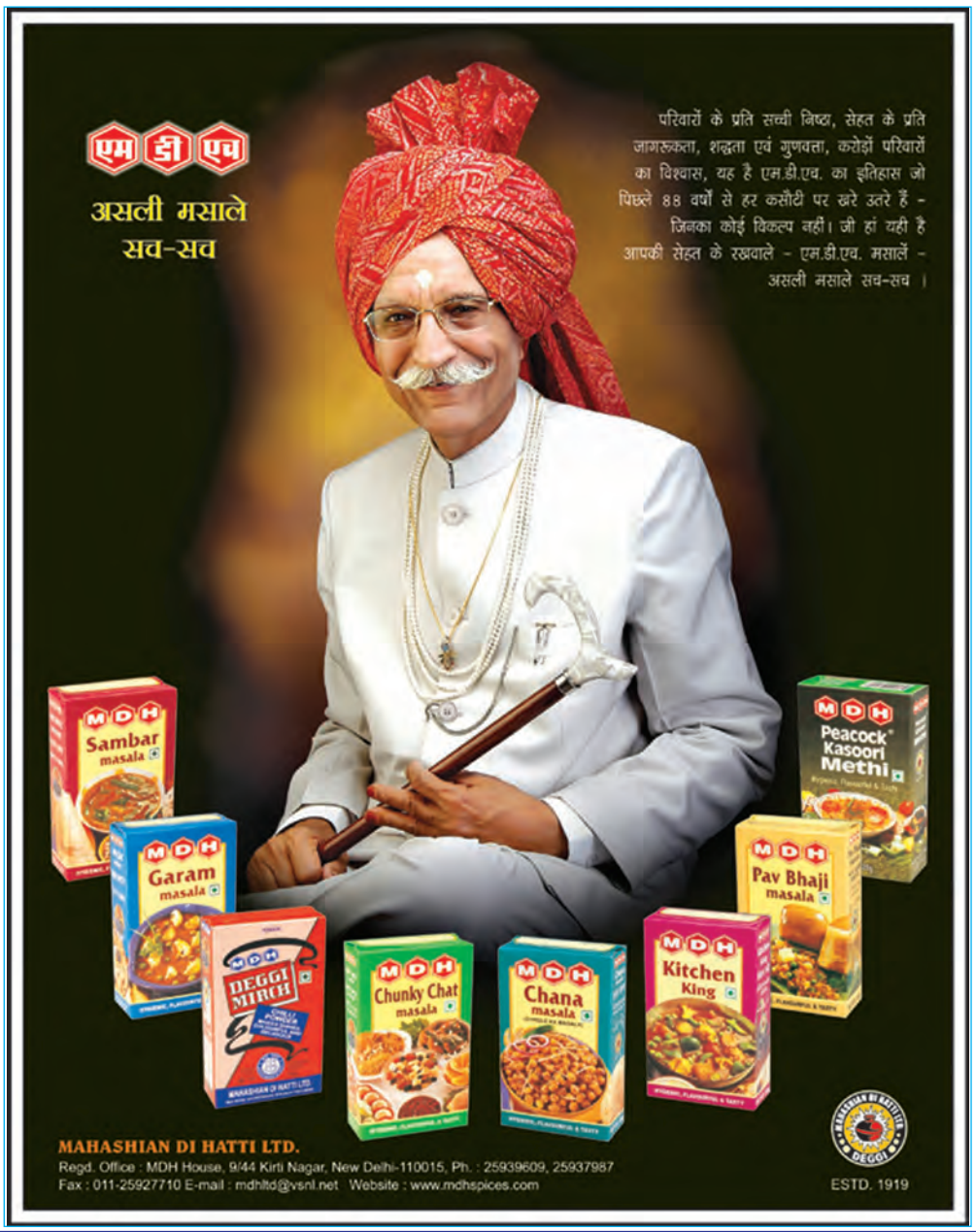

साप्ताहिक आर्य सन्देश में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धांतिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2 नारायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, फोन:23360150, 23365959, E-mail: aryasabha@yahoo.com; Web: www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक: धर्मपाल आर्य सह सम्पादक: विनय आर्य व्यवस्थापक: शिव कुमार मदान सह व्यवस्थापक: आर्य डॉ. ओम प्रकाश भटनागर, एस.पी. सिंह